भक्ति का परिचायक है मां की सेवाः आचार्यश्री महाश्रमण

केलवा में चातुर्मास, आज मनाई जाएगी संवत्सरी, दिनभर होंगे कार्यक्रम, सुबह साढे सात बजे शुरू होगा प्रवचन, उमड रहा है श्रावक–श्राविकाओं का रैला

केलवाः 1 सितम्बर

आचार्यश्री महाश्रमण ने मां की सेवा को भक्ति का परिचायक बताते हुए कहा कि यह मनुष्य की जन्मदात्री है। जीवन में जितनी इसकी सेवा की जाए वह बहुत मायने रखता है। हृदय सम्राट भगवान महावीर स्वामी ने कुक्षि से बाहर आने के पूर्व ही अपनी मां की सेवा करने का क्रम प्रारंभ कर दिया था और अपनी जन्मदात्री के जीवन के अंतिम समय तक उनकी कृताज्ञता बनी रही। आज के परिवेश में हमें भी इसी तरह की सेवा करने की आवश्यकता है।

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिष्ठाता आचार्यश्री ने उक्त उद्‌गार यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास में पर्युषण महापर्व के सातवें दिन गुरुवार को आयोजित धर्मसभा में व्यक्त किए। उन्होंने श्रवणकुमार की अपने माता–पिता के प्रति की गई सेवा का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज समय के साथ हम अपने माता–पिता के त्याग को भूलते जा रहे है। वर्तमान में हम उनके बेटे है, कल हम भी माता–पिता बनेंगे। हमारी संतान का भी रवैया इसी तरह रहेगा तो इसका दोष किसे देंगे। यह विचारणीय प्रश्न है। माता–पिता की ओर से दिए गए आदेश को भगवान का आदेश मानकर उसकी क्रियान्विति करने की आज महत्ती आवश्यकता है। उन्होंने यदि किसी काम को करने से मना कर दिया तो उसे कतई न करें। अगर हम मना करने के बावजूद ऐसा करेंगे तो उनके मन पर ठेस पहुंच सकती है। उनकी भावनाओं का सम्मान करने की आवश्यकता है।

उन्होंने महिलाओं से आह्वान किया कि गर्भस्थ काल के दौरान वे अपनी कुक्षि में पल रहे बच्चे की सुरक्षा को लेकर सदैव सचेत रहे। स्वयं के साथ बच्चे को लेकर संयम बरतें। उसे दुनियां में आने से पूर्व ही संस्कारित बनाने के उद्‌देश्य से मन में अच्छे विचारों का समागम करें। एक मां ही अपने बच्चे की पहली शिक्षिका मानी जाती है। इसलिए वह प्रारंभ से ही अपनी संतान को अच्छी शिक्षा दें और भविष्य में भी उसे प्रेरित करें। गलत और बुरे ख्याल सोचने से संतान पर उसका विपरित असर पडने की

संभावना बनी रहती है। इस समय धर्म की आराधना और साहित्य से ज्ञान अर्जित करने की जरुरत है।

स्वप्नों के स्वरूप अनेक

आचार्यश्री ने भगवान महावीर स्वामी की आध्यात्म यात्रा के प्रसंग पर स्वप्नों के अनेक रूपों को प्रदर्शित किया और कहा कि शास्त्रों में 72 स्वप्नों को स्थान दिया गया है। इनमें से 30 महास्वप्न होते है। दीक्षा के पूर्व भगवान महावीर का सांसारिक नाम वर्धमान था। इनके जन्म के पूर्व ही उनकी माता को कुक्षि में एक दिव्य आत्मा के प्रवेश का ज्ञान 14 महास्वप्नों के माध्यम से हो गया था कि उसका पुत्र यशस्वी और महान् पुरुष के रूप में ख्याति अर्जित करेगा। कालांतर में यह स्वप्न साकार हुआ और यही वर्धमान भगवान महावीर स्वामी के रूप में प्रसिद्ध हुआ। उनकी माता द्वारा देखा गया यह स्वप्न भविष्य का सूचक बना। आचार्यश्री भिक्षु की सांसारिक मां ने भी एक सपना देखा था कि उसका पुत्र महान् बनेगा और बाद में स्वप्न के अनुरूप ही हुआ। आचार्यश्री भिक्षु ने अध्यात्म की ऐसी धर्म पताका फहराई कि वे जन जन में प्रसिद्ध हो गए। कुछेक स्वप्न में ऐसा होता है कि यदि हमारा किसी से घनिष्ठ प्रेम है तो वे स्वप्न में दिखाई देता है। यह संभव है कि आज भी अनेक लोगों के स्वप्न में गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ होते होंगे। आचार्यश्री महाप्रज्ञ कहते थे कि मन में जो स्थिति होती है उसका प्रकृटिकरण स्वप्न के माध्यम से होता है। कुछ स्वप्न बिना सिर–पैर वाले होते है, जिनका जीवन के साथ किसी तरह का जुडाव नहीं होता।

भोजन कराने से बढता है प्रेम

आचार्यश्री ने कहा कि यदा कदा आयोजित होने वाली भोजन कार्यक्रम में अपने सगे संबधियों और परिचितों को बुलाने से परस्पर प्रेम की भावना बढती है। वात्सल्य पुष्ट करने का मौका मिलता है। साधु–साध्वियों को भी चाहिए कि वे भी अपने अग्रज अथवा अधिनस्थ साधुओं को आहार उपलब्ध कराकर प्रेम में इजाफा करने के कार्य को महत्व दें। छोटी उम्र और बीमार साधुओं ने आहार किया या नहीं। इस दिशा में ध्यान देने की आवश्यकता है। बच्चे के नामकरण संस्कार को संस्कृति के अनुरूप मानते हुए कहा कि इससे व्यक्ति की पहचान कायम होती है। नाम ऐसा हो जिसका कोई अर्थ निकले। उन्होंने श्रावक–श्राविकाओं से आह्वान किया कि वे अपने बच्चों को खेलने के लिए रोकें नहीं, बल्कि उसे प्रेरित करें। खेलने से शरीर का व्यायाम होता है। मैं स्वयं बाल्यावस्था में कबड्डी खेलता था। उससे मुझे प्राणायाम की अनुभूति होती थी। इसी तरह की अनुभूति अन्य खेलों के माध्यम से भी हो सकती है। खेलों से अनेक अभ्यास होते है।

आज संवत्सरी है। इसी दिन चाहे वह छोटा हो बडा, वृद्ध हो या युवा सभी को उपवास करने की आवश्यकता है। संवत्सरी के कार्यक्रम सुबह साढे सात बजे प्रवचन के साथ प्रारंभ हो जाएंगे, जो दिनभर चलेंगे। इस दिन व्याख्यान सुनने की प्रेरणा भी दी।

जिज्ञासाओं का समाधान होता है

मंत्री मुनि सुमेरमल ने भगवती सूत्र की व्याख्या करते हुए कहा कि यह ऐसा सूत्र है जिसमें उल्लेखित अनेक आगमों से जिज्ञासाओं का समाधान होता है। अन्य समाज के ऋषि, मुनि और तपस्वियों का वर्णन भी इसमें मिलता है। उन्होंने गणित को सत्य के मार्ग में आगे बढने का मार्ग बताते हुए कहा कि इसमें शोध किया जाए तो इसकी एक स्वतंत्र पुस्तक तैयार हो सकती है। भगवती सूत्र में कालांतर की राजनीति, सामाजिक संरचना और समाज नीति का उल्लेख भी देखने को मिलता है। चार अनुयोगों के साथ आगमकालीन परिस्थिति का ज्ञान भी बडी सहजता से प्राप्त हो सकता है। इस सूत्र में तत्व, अध्यात्म, ज्योतिष और ग्रहों का भी उल्लेख देखने को मिलता है। इस अवसर पर आचार्यश्री ने उपवास करने वाले 40 से अधिक तपस्वियों का प्रत्याखान किया। सात की तपस्या कर अठाई की ओर अग्रसर केलवा निवासी चिन्मय कोठारी ने आचार्यश्री को नमन कर अपने विचार व्यक्त किए। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

तेरापंथ महिला मंडल की ओर से गुरुवार को तपस्या करने वाले तपस्वियों का अनुमोदन किया गया। दोपहर दो बजे से तीन बजे तक आयोजित इस कार्यक्रम में रतनदेवी सांखला, पुष्पादेवी बोहरा, शांतिलाल सोलंकी, हस्तीमल सोलंकी, अनिल कोठारी, मूली देवी हिरण और चिन्मय कोठारी की तपस्या का अनुमोदन किया गया। साथ ही भक्ति कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसमें महिलाओं ने गीतिका और गीत प्रस्तुत किए। इस अवसर पर श्रीमती कल्पना चव्हान, स्नेहलता कोठारी, रेखा कोठारी, रत्ना कोठारी, नीरू कोठारी, कुसुम सांखला, वनिता बोहरा, रेखा सिंघवी सहित तेरापंथ महिला मंडल की पदाधिकारी और सदस्याएं मौजूद थी।

मुस्लिम प्रतिनिधियों ने की भेंटः कस्बे में निवासरत मुस्लिम समाज के प्रतिनिधियों ने बुधवार शाम को यहां चातुर्मास कर रहे तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिष्ठाता आचार्यश्री महाश्रमण से मुलाकात की और ईद की मुबारकबाद दी। समाज के सदर शरीफ मोहम्मद, अब्दुल रहमान, अशफाक हुसैन, लियाकत मोहम्मद और अल्ताफ मोहम्मद ने आचार्यश्री से भेंट की। इस दौरान व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष परमेश्वर बोहरा, बाबूलाल कोठारी, महेन्द्र कोठारी अपेक्ष आदि मौजूद थे।